॥श्री महिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम् ॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविंध्यषिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जयजय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ १

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि धुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणिकिल्बिषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणिदुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवन प्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणि तुंगहिमालय शृंग निजालय मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैतभभंजिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ३

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितखण्डविपतितमुण्ड भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ४

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूत कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ५

अयि शरणागत वैरिवधूवर वीरवराभय दायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधिशिरोधिकृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद महोमुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ६

अयि निजहुङ्कृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रचते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भव शोणित बीजलते।
शिवशिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ७

धनुरनुसङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदंगनटत्कटके
कनक पिशंग पृषत्कनिषंगरसद्भट शृङ्ग हतावटुके।
कृतचतुरंग बलक्षितरंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ८

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भण भिन्जिमि भिंक्रतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते ।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९

अयि सुमन: सुमन: सुमन: सुमन: सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्र वृते ।
सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमरभ्रमर भ्रमरधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १०

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरजितवल्लिक पल्लिकमल्लिकभिल्लिकभिल्लक वर्गवृते।
सितकृतफ़ुल्ल समुल्लसितारुणतल्लज्पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ११

अविरलगण्डगलन्मदमेदुरमत्तमतङ्गजराजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधिरुपपयोनिधि राजसुते।
अयि सुदतीजन लालसमानसमोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिसासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १२

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिवलत्कल हंसकुले ।
अलिकुल संकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १३

करमुरलीरववीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते
मिलितपुलिन्द मनोहर गुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते ।
निजगुणभूत महाशबरीगण सद् गुणसंभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १४

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे

प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजरकुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधिसमाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनंसशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलय: स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतोमम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिंचिनुतेगुण रंगभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ तटीपरिरम्भ सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधनेभवती कृपया किमुतक्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतोजननी कृपयासियथासि तथाऽनुमितासिरते ।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतामपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २०